Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 10/March/2026 **IJRAW:** 2026; 5(5):141-145 **Accepted:** 22/April/2026

खजुराहो से प्राप्त हिंदू देव प्रतिमाओं में मांगलिक प्रतीक

[*1]डॉ. ओम प्रकाश यादव

[*1]असिस्टेंट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास विभाग, मथुरा प्रसाद महाविद्यालय, कोंच, जालौन, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झांसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

भारतीय कला में मानवीय और दैवीय तत्वों के मध्य जो संबंध व्यवहार प्रतीत होता है वही कला की आत्मा है और वह अपनी अभिव्यक्ति में प्रतीक का सहारा लेती है। मूर्ति कला में लौकिक-अलौकिक तथ्यों की अभिव्यक्ति के लिए प्रतिको का प्रचलन है। देवता तथा उससे संबंधित विचारों की अभिव्यक्ति प्रतीक के द्वारा प्रकट की जाती है। भारतीय मूर्तिकला में प्रतिकों के माध्यम से देव प्रतिमा का समीकरण भी स्थापित किया जाता है। जिसके चिंतन से देवता के साथ उसके प्रतीक तत्व भी स्मृति में उभर आते हैं। इस प्रकार प्रतीक तत्व प्रतिमा और उससे संबंधित विचारों को परस्पर जोड़ने का कार्य करते हैं। प्रतीक की महत्ता के कारण प्राचीन भारतीय मूर्तिकला 'प्रतीकात्मक कला' कही जाती है। खजुराहो से प्राप्त शैव, वैष्णव धर्म के अनेक मंदिरों में विविध देवी-देवताओं की प्रतिमाओं को प्रदर्शित किया गया है जिनमें विविध प्रकार के प्रतिको का अंकन किया गया है जिन्हें अध्ययन की सुविधा अनुसार तीन श्रेणियों, प्रथम आयुध प्रतीक, द्वितीय वाहन प्रतीक और तृतीय मांगलिक प्रतीक के रूप में विभाजित किया गया है।मेरे शोध लेखन का विषय क्षेत्र मांगलिक प्रतीक है अतः इस लेख में मांगलिक प्रतीक का ही उल्लेख किया जा रहा है।

मुख्य शब्द: लौकिक, अभिव्यक्ति, मांगलिक, प्रतीक, शैव, वैष्णव, प्रतिमा, प्रतिरूप, मूर्त, अमूर्त।

प्रस्तावना

खजुराहो की मूर्ति कला में देव प्रतिमा के साथ देवी चिन्हों अथवा मांगलिक प्रतीकों को प्रदर्शित किया गया है। मांगलिक प्रतीक देवता के स्वरूप एवं उससे संबंधित विचारों का प्रदर्शन करते हैं। मानव हृदय में जागृत उन समस्त भावनाओं और विचारों को जिनके लिए शब्दों की भाषा पर्याप्त नहीं है, प्रतीक के द्वारा सरलता से अभिव्यक्त किया जाता है। डॉ वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है कि- "जो प्रतिरूप है उसकी सबसे अधिक अभिव्यक्ति प्रतीक द्वार ही की जा सकती है। प्रतीक ही अमूर्त की सच्ची मूर्ति है। प्रतीक में व्यक्तिगत रूपों का अभाव होने से यह प्रतिरूप के सब रूपों को प्रकट कर सकता है जो स्वयं मूर्ति भाव से कम से कम आक्रांत होता है वही प्रतिरूप का सबसे अधिक परिचायक है"। प्रतिकों का सर्वाधिक सुंदर और सार्थक प्रदर्शन भारतीय मूर्तिकला की विशेषता है। [1] प्रतिमा में प्रतीक रूपों का सृजन करना मानव का सहज स्वभाव रहा है प्रतिकों के अंकन के पीछे उपासना, रहस्य, भय, अतिविश्वास आदि भावनाएं रही हैं। कुछ प्रतिकों का अंकन प्रतिमाओं में बार-बार किया गया है। खजुराहो से प्राप्त प्रतिमाओं में अंकित प्रमुख मांगलिक प्रतीक में शंख, पद्म (कमल), पुस्तक, घट, श्रीफल, कमण्डलु, अक्षमाला, अमृतघट, वीणा, डमरु, ध्वज, शारंग, चक्र, गदा, त्रिशूल, कुण्डिका, लड्डुक आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

शंख वासुदेव का प्रतीक माना गया है। विष्णु के विभिन्न स्वरूपों के साथ अत्यंत सौंन्दर्यात्मक ढंग से शंख का अंकन प्राप्त होता है। [2] शंख का उपयोग भगवान शिव और सूर्य के पूजन में भी वर्णित है।शंख का महत्व धार्मिक उपासना के साथ-साथ राजनीतिक क्षेत्र में युद्ध का उद्घोष और विजय की सूचना का प्रतीक माना गया है। प्राचीन काल में प्रत्येक योद्धा इसे अपने साथ रखते थे। शंख अनादि काल से भारतीय जीवन का अंग रहा है। खजुराहो की प्रतिमाओं में मांगलिक प्रतीक शंख का सुंदर अंकन मिलता है। खजुराहो से प्राप्त विष्णु के विभिन्न स्वरूपों की प्रतिमाओं के साथ अत्यंत सौंन्दर्यात्मक ढंग से शंख का अंकन किया गया है। दूलादेव मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर शंखधारी हरिहर की प्रतिमा उकेरी गई है। लक्ष्मण मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर शंखधारी विष्णु और हृषिकेश, पृष्ठ भित्ती पर शंखधारी केशव और दायीं भित्ती पर शंखधारी त्रिविक्रम को अंकित किया गया है। चतुर्भुज मंदिर के गर्भगृह द्वार पर, विश्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती, कंदरिया महादेव मंदिर की आंतरिक प्रदक्षिणा, दायीं बहिर्भित्ति पर, जवारी मंदिर के गर्भगृह द्वार पर तथा जगदंबा मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर शंखधारी त्रिविक्रम, हृषिकेश और वैष्णवी की प्रतिमाएं प्रदर्शित की गई हैं। पार्श्वनाथ मंदिर की दायीं बहिर्भित्ति पर शंखधारी माधव व संकर्षण का अंकन प्राप्त हुआ है। आदिनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर शंखधारण किए हुए गरुड़ासन वैष्णवी का अंकन किया गया है। [3] वामन मंदिर की दायीं बहिर्भित्ति पर हृषिकेश व पुरूषोत्तम के हाथों में मांगलिक प्रतीक शंख का सुंदर अंकन प्राप्त होता है तथा बायीं बहिर्भित्ती पर

***Corresponding Author:** डॉ. ओम प्रकाश यादव

संकर्षण व अच्युत को शंखधारी रूप में अंकित किया गया है। प्रतापेश्वर मंदिर की आधार भित्ती पर सूर्य, विष्णु और शिव की अष्टभुजी संयुक्त प्रतिमा में शंख का सुंदर अंकन प्राप्त हुआ है। [4]

पद्म या कमल भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण मांगलिक प्रतीक है। कमल सदैव प्रकाशमान सूर्य की ओर मुंह किये होता है इसलिए इसे हमारे जीवन में प्रकाशोपाशक होने का प्रतीक भी माना जाता है। विविध तिथि, त्योहार, शुभ कार्यों तथा मांगलिक अनुष्ठानों में पद्म का चित्रांकन अत्यधिक महत्वपूर्ण है। देव प्रतिमाओं के हाथ में धारण किए हुए अथवा आसन के रूप में कमल अंकित रहता है। ब्रह्मा तथा सरस्वती को पद्मासना प्रदर्शित किया जाता है। ऐसा माना जाता है कि सृष्टि के रचयिता का जन्म कमल से हुआ है इसलिए कमल को सृष्टि का प्रतीक माना जाता है। कमलनाल (तना) माया है और पुरुष संपूर्ण विश्व है। फल निवारण का प्रतीक है। भगवान विष्णु के हाथ में कमल के रूप में संसार है।

खजुराहो की विभिन्न देव प्रतिमाओं में कमल का सुंदर अंकन प्राप्त होता है। लक्ष्मण मंदिर की बाह्य पृष्ठ भित्ती पर पुरुषोत्तम व विष्णु की और बायीं बहिर्भित्ती पर पुरुषोत्तम और हरित की मूर्तियों में पद्म का अंकन प्राप्त होता है। मंदिर के आंतरिक प्रदक्षिणा पर भैरव व ह्यग्रीव को पद्म धारण किए हुए दिखाया गया है। लक्ष्मण मंदिर से ही दुर्गा प्रतिमा प्राप्त हुई है देवी के ऊपरी दो भुजाओं में कमल का अंकन है। वामन मंदिर की दायीं बहिर्भित्ति पर पुरुषोत्तम के हाथ में पद्म और बायीं बहिर्भित्ती पर सूर्य-विष्णु की संयुक्त प्रतिमा में शंख और चक्र के साथ उनके हाथों में पद्म भी प्रदर्शित है। मंदिर के गर्भगृह द्वार पर लक्ष्मी की पद्मधारी मूर्ति अंकित है तथा पृष्ठभित्ती पर वामन की पद्म मूर्ति है। जगदंबा मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर पुरुषोत्तम व सरस्वती के हाथों में तथा दायीं बहिर्भित्ति पर भैरव के हाथों में पद्म का अंकन प्राप्त होता है। [5]

विश्वनाथ मंदिर के सामने की बायीं भित्ती पर विष्णु और लक्ष्मी की पद्मधारी प्रतिमा प्रदर्शित है जबकि मंदिर के आंतरिक प्रदक्षिणा में पद्मधारी कुबेर और पृष्ठ भाग पर बने लघु मंदिर में पार्श्व और अंकुश के साथ वायु को पद्म धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह द्वार पर अंकित प्रतिमाओं में सरस्वती की द्वितीय भुजा में कमल का अंकन है। शांतिनाथ मंदिर के बाह्य द्वार पर पद्मधारी शिव का अंकन है। कंदरिया महादेव मंदिर के दायीं और बायीं बहिर्भित्ती पर शिव को पद्म धारण किए हुए मूर्तित किया गया है। दायीं बहिर्भित्ति पर शिव के साथ इंद्र को और बायीं बहिर्भित्ती पर शिव के साथ वायु को पद्मधारी स्वरूप में अंकित किया गया है। मंदिर की आधार भित्ती पर अंकित सरस्वती की तृतीय भुजा में कमल प्रदर्शित है। पार्श्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर पद्म का कलात्मक अंकन सरस्वती की प्रतिमा के साथ किया गया है। [6] खजुराहो संग्रहालय में संरक्षित छठे तीर्थंकर पद्मप्रभ की प्रतिमा में मांगलिक प्रतीक पद्म का कलात्मक प्रदर्शन है। [7]

पुस्तक ज्ञान, पवित्रता और बुद्धिमत्ता का प्रतीक मानी जाती है। जो मानसिक अंधकार को दूर कर सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करती है। यह ऐतिहासिक ज्ञान का संरक्षक और व्यक्ति के आध्यात्मिक व वैचारिक उत्थान के लिए "जागृत देवता" मानी जाती है जो मानसिक शांति और मार्गदर्शन प्रदान करती है। प्राचीन भारतीय कला में पुस्तकों को एक महत्वपूर्ण मांगलिक प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त है। देवी सरस्वती की प्रतिमा में देवी के हाथ में पुस्तक का अंकन कर कलात्मक लक्षणों को पूर्णता प्रदान की जाती है। सरस्वती देवी के अतिरिक्त कुछ अन्य देव प्रतिमाओं में भी पुस्तक का अंकन मिलता है। खजुराहो से अनेक ऐसी देव प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं, जिनके हाथों में ज्ञान रूपी मांगलिक प्रतीक पुस्तक का अंकन किया गया है। खजुराहो में स्थित विश्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर ज्ञान की देवी सरस्वती एवं बाला की संयुक्त प्रतिमा को पुस्तक सहित प्रदर्शित किया गया है। दायीं बहिर्भित्ति पर पुस्तक धारी शिव की मूर्ति का अंकन प्राप्त होता है जबकि मंदिर के आंतरिक प्रदक्षिणा में स्थित ह्यग्रीव की मूर्ति के हाथ में पुस्तक का कलात्मक प्रदर्शन है। विश्वनाथ मंदिर की भांति कंदरिया महादेव मंदिर के आंतरिक प्रदक्षिणा में सरस्वती और बाला की संयुक्त प्रतिमा एवं ह्यग्रीव की मूर्ति के हाथ में पुस्तक का अंकन किया गया है। आंतरिक प्रदक्षिणा में ही पुस्तक धारी वायु का अंकन मिलता है। मंदिर के बायीं बहिर्भित्ती पर पुस्तक धारी शिव एवं वैष्णवी की मूर्ति है जबकि दायीं बहिर्भित्ती पर अग्नि के हाथ में पुस्तक का कलात्मक अंकन प्राप्त होता है। सरस्वती के हाथों में पुस्तक का अंकन कंदरिया महादेव मंदिर की आधार भित्ती पर भी प्राप्त होता है। [8] सरस्वती और बाला की पुस्तक धारी संयुक्त प्रतिमाएं वामन मंदिर के गर्भगृह द्वार तथा दायीं बहिर्भित्ति पर, नंदी मंदिर के गर्भ द्वार पर तथा दूलादेव, जवारी मंदिर के गर्भगृह द्वार पर अंकित है। लक्ष्मण मंदिर के दाहिने मंडप पर सरस्वती एवं बाला की संयुक्त प्रतिमा को तथा मंदिर के सामने लघु मंदिर में वरुण की प्रतिमा और पृष्ठ भाग के लघु मंदिर में मंगला और नैऋति की प्रतिमा को पुस्तक धारी प्रदर्शित किया गया है। इस मंदिर के दाएं लघु मंदिर में सिंहवाहिनी देवी के एक हाथ में पुस्तक है। [9] जगदम्बा मंदिर, चित्रगुप्त मंदिर तथा पार्श्वनाथ मंदिर व आदिनाथ मंदिर के दायीं बहिर्भित्ति पर अग्नि देवी की प्रतिमा का अंकन प्राप्त होता है जिसके हाथ में पुस्तक का कलात्मक अंकन किया गया है। जगदम्बा मंदिर के गर्भगृह में देवी ब्राह्मी को पुस्तक धारण किए हुए अंकित किया गया है। कंदरिया महादेव मंदिर में देवी की एक चतुर्मुखी प्रतिमा है जिसके हाथों में पुस्तक का अंकन है। [10]

खजुराहो की मूर्ति कला में 'घट' एक प्रमुख मांगलिक और आध्यात्मिक प्रतीक है जो बहुतायत, पवित्रता, समृद्धि और उर्वरता को दर्शाता है। मंदिरों की बहिर्भित्ती पर घट या कलश को पूर्णता और सकारात्मक ऊर्जा के संकेत के रूप में चित्रित किया गया है जो जीवन के सांसारिक सुखों से मोक्ष की ओर यात्रा का प्रतीक है। खजुराहो से प्राप्त विभिन्न देव प्रतिमाओं के साथ घट का सुंदर एवं कलात्मक अंकन प्राप्त होता है। विश्वनाथ मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती व पृष्ठ भाग पर स्थित शिव प्रतिमाओं में घट अंकित है।घटधारी शिव की कुछ प्रतिमाएं विश्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर अंकित है। मंदिर के आंतरिक प्रदक्षिणा पर बनी उमा-महेश की मूर्ति में महेश के हाथ में घट प्रदर्शित किया गया है। अग्नि के हाथ में घट का प्रदर्शन विश्वनाथ मंदिर के दायीं बहिर्भित्ति पर प्राप्त होता है जबकि मंदिर के दाएं एवं बाएं दोनों तरफ के बहिर्भित्तियों पर शनि देव के हाथ में घट का सुंदर एवं कलात्मक अंकन है। कंदरिया महादेव मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर घटधारी शिव प्रतिमा का अंकन प्राप्त होता है मंदिर की दायीं बहिर्भित्ति पर घटधारी अम्बा, अग्नि और इंद्र का अंकन है। आंतरिक प्रदक्षिणा पर घटधारी लक्ष्मी की प्रतिमाएं हैं मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर तथा चौंसठ योगिनी मंदिर में हंसवाहिनी वैष्णवी प्रतिमा में घट का अंकन है। लक्ष्मण मंदिर के गर्भ द्वार के बायीं बहिर्भित्ती पर घटधारी शिव प्रतिमाओं को अंकित किया गया है। आंतरिक प्रदक्षिणा पर घटधारी लक्ष्मी की प्रतिमा है जबकि लक्ष्मण मंदिर के सामने दायीं ओर बने लघु मंदिर में दुर्गा प्रतिमा में घट का अंकन प्राप्त होता है और सामने के बाएं लघु मंदिर में स्थित ब्रह्मा की मूर्ति में घट को प्रदर्शित किया गया है। [11] जगदम्बा मंदिर की दायीं व बायीं बहिर्भित्ती पर मूर्तित शिव प्रतिमाओं में घट अंकित है, मंदिर के दायीं बहिर्भित्ति पर शिव के साथ अम्बा, अग्नि, इंद्र और यम प्रतिमाओं में भी घट का अंकन किया गया है। मंदिर के गर्भ गृह में देवी ब्राह्मी को घट धारण किए हुए अंकित किया गया है। कंदरिया महादेव मंदिर में देवी की एक चतुर्मुखी प्रतिमा है उसके दो हाथों में घट या कलश का अंकन है। [12] वामन मंदिर के पृष्ठ भाग पर स्थित शिव प्रतिमा में घट अंकित है। मंदिर के गर्भगृह द्वार पर देवी लक्ष्मी के हाथों में घट का अंकन है जबकि दायीं बहिर्भित्ति पर घटधारी

सरस्वती की प्रतिमा को अंकित किया गया है। जवारी मंदिर के पृष्ठ भाग पर अंकित शिव की प्रतिमा में घट प्रदर्शित है। भरत चित्रगुप्त मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर घटधारी शिव की प्रतिमा अंकित है। पार्श्वनाथ मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर घटधारी शिव प्रतिमा अंकित है। [13]

मंदिरों में कलात्मक रूप से नक्काशीदार कलश (पूर्ण घट) प्रचुरता और ऐश्वर्य का प्रतीक है। भारतीय कला परंपरा में घट को पवित्र जल का पात्र माना जाता है, जो मंदिर प्रांगण को मंगलकारी बनाता है। मंदिर के बहिर्भित्ति पर मंगल घट का अंकन यह दर्शाता है कि सांसारिक इच्छाओं (काम) को पवित्रता (कलश) के साथ स्वीकार करने के बाद ही साधक गर्भगृह में मोक्ष की प्राप्ति कर सकता है। उपरोक्त मूर्तियों में घट सिर्फ एक पात्र नहीं बल्कि जीवन की पूर्णता, सकारात्मकता और पवित्रता को दर्शाने वाला एक सशक्त शिल्प तत्व है जिसे आज भी परंपराओं में जीवित देखा जा सकता है।

श्रीफल शुभ, संपन्नता एवं यश का प्रतीक माना गया है। श्रीफल को हिंदू धर्म में लक्ष्मी का फल माना जाता है, जो सौभाग्य और पूर्णता का प्रतीक है। श्रीफल को प्रमुख रूप से लक्ष्मी, विष्णु, शिव और देवी प्रतिमाओं की भुजाओं में या मंदिरों के अलंकरण में शिव और पार्वती को भेंट करते हुए प्रदर्शित किया गया है। इसीलिए पूजा विधान तथा देव स्तुति विधान में श्रीफल का प्रमुख स्थान है। मूर्ति कला में देवी-देवताओं को श्रीफल धारी अंकित किए जाने की परंपरा रही है। यह परंपरा खजुराहो के मूर्ति शिल्प में भी दिखाई पड़ती है। श्रीफल के अंकन से जहां देवी लक्षणों का प्रदर्शन हुआ है वही मूर्ति की सौन्दर्यात्मकता में भी वृध्दि हुई है। यह प्रतिमाओं की सुंदरता को बढ़ाता है और उस समय की सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाता है। खजुराहो की विश्वनाथ मंदिर के बायीं बहिर्भित्ती पर अंकित देवी-देवताओं को श्रीफल धारी प्रदर्शित किया गया है। वरद मुद्रा में विराजमान विष्णु, देवी सरस्वती और वरुण की प्रतिमा के हाथों में श्रीफल का अंकन किया गया है जबकि मंदिर की प्रदक्षिणा पर उमा-महेश की प्रतिमा में महेश के हाथों में श्रीफल प्रदर्शित किया गया है। खजुराहो संग्रहालय में संग्रहित शिव आदित्य की प्रतिमा के हाथ में श्रीफल रखे हुए प्रदर्शित हैं। विश्वनाथ मंदिर की प्रदक्षिणा की भांति पार्श्वनाथ मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर उमा - महेश की प्रतिमा का अंकन प्राप्त होता है जिसमें महेश प्रतिमा के हाथों में श्रीफल है। पार्श्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर आदित्य तथा सावित्री की प्रतिमाओं में श्रीफल का सुन्दर अंकन प्राप्त होता है जबकि मंदिर के पृष्ठ भाग में शिव की प्रतिमा है जिसमें उन्हें श्रीफलधारी प्रदर्शित किया गया है।

कमण्डलु को ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। मूर्तिकला में भी मांगलिक प्रतीक के रूप में कमण्डल का अंकन किया जाता है। खजुराहो के मंदिरों की शिल्पकारी में कमण्डल को पवित्रता, त्याग, ज्ञान और संन्यास के प्रतिक के रूप में दर्शाया गया है। यह मुख्य रूप से देवताओं, तपस्वियों और ऋषियों की मूर्तियों के साथ होता है, जो सांसारिक मोह से मुक्ति, आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति और पवित्रता को दर्शाता है, जो मंदिर के तांत्रिक और दार्शनिक वातावरण में संतुलन लाता है। खजुराहो से प्राप्त ब्रह्मा की विभिन्न प्रतिमाओं में कमण्डल प्रदर्शित है। उदाहरण स्वरूप वामन मंदिर के गर्भ द्वार तथा दायीं बहिर्भित्ती पर, कंदरिया मंदिर की आंतरिक प्रदक्षिणा तथा दायीं एवं बायीं बहिर्भित्ती पर, नन्दी मंदिर के गर्भगृह द्वार पर, आदिनाथ मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर, पार्श्वनाथ मंदिर तथा लक्ष्मण मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर मूर्तित ब्रह्मा के हाथ में कमण्डल का अंकन किया गया है। लक्ष्मण मंदिर के सामने के बाएं लघु मंदिर तथा मुख्य मंदिर के मंडप में त्रिमुखी ब्रह्मा को कमण्डलधारी प्रदर्शित किया गया है और दायीं बहिर्भित्ति पर ब्रह्माणी की मूर्ति में कमण्डल का अंकन है, इसी प्रकार विश्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर त्रिमुखी ब्रह्मा कमण्डल धारण किए हुए हैं। जवारी मंदिर एवं दूलादेव मंदिर के गर्भगृह द्वार पर अभय मुद्रा में वाहनासीन ब्रह्मा के एक हाथ में कमण्डल प्रदर्शित है। ब्रह्मा के अतिरिक्त खजुराहो से प्राप्त अन्य देव प्रतिमाओं में भी कमण्डल को मांगलिक प्रतीक रूप में प्रदर्शित किया गया है। विश्वनाथ मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती तथा जगदंबा मंदिर की पृष्ठभित्ती पर अघोर स्वरूपी शिव के हाथ में कमण्डल अंकित है। कंदरिया मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर इंद्र और अग्नि को वरद मुद्रा में प्रतिबिंबित किया गया है इसमें इंद्र को अंकुश, सर्प, घट एवं कमण्डल धारण किए हुए और अग्नि को अक्षमाला और कमण्डल धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार वामन मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर वरद मुद्रा में वायु की मूर्ति है, जिसमें वायु अंकुश और दंड के साथ कमण्डल भी धारण किए हुए हैं। [14]

अक्षमाला भी एक महत्वपूर्ण मांगलिक प्रतीक है। खजुराहो के मंदिरों की शिल्प कला में अक्षमाला को ज्ञान, पवित्रता और मंगल के प्रतिक के रूप में देवी-देवताओं की प्रतिमाओं में दर्शाया गया है। अक्षमाला विद्या, योग और आध्यात्मिक उत्थान का सूचक है, जो संसार और मोक्ष के संगम को दर्शाता है। यह आध्यात्मिक समृद्धि और सुरक्षा का प्रतीक है। अक्षमाला धारण किए हुए देवी-देवताओं की प्रतिमाएं अक्सर ध्यान और ज्ञान की मुद्रा में होती हैं, जो सांसारिक मोह से ऊपर उठकर ईश्वरीय कृपा का संकेत देती है। यह मूल रूप से ब्रह्मा की माला मानी जाती है किंतु अन्य देवी-देवताओं को भी अक्षमाला धारण किए हुए अंकित किया जाता है। खजुराहो की विश्वनाथ मंदिर के बायीं बहिर्भित्ती पर चतुर्भुजी ब्रह्मा की प्रतिमा है जिनके चौथे हाथ में अक्षमाला प्रदर्शित है। मंदिर के बायीं ओर एक लघु मंदिर में सिंहवाहिनी गज लक्ष्मी की प्रतिमा है, देवी ललितासन में विराजमान हैं उनका पहला हाथ अक्षमाला लिए हुए अभय मुद्रा में है। [15] चतुर्भुज मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर विष्णु के हाथ में अक्षमाला अंकित है। वामन मंदिर की दायीं एवं बायीं बहिर्भित्ती पर अक्षमाला धारी शिव प्रतिमा है। लक्ष्मण मंदिर की बहिर्भित्ती पर देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों में और अंतः प्रदक्षिणा में दायीं ओर पद्मपीठ पर देवी लक्ष्मी विराजमान है उनके हाथों में अक्षमाला प्रदर्शित है। [16] अन्य मंदिरों के अलंकृत शिल्पो में अक्षमाला मांगलिक प्रतीक के रूप में अंकित है। पार्श्वनाथ मंदिर की आंतरिक प्रदक्षिणा पर चतुर्भुजी मंगल को अक्षमाला लिए हुए प्रदर्शित किया गया है। [17]

मांगलिक प्रतीक के रूप में अमृतघट या अमृत कलश का भी खजुराहो के शिल्पांकन में उल्लेख मिलता है। खजुराहो के मंदिरों में अमृत घट का समृद्धि, पवित्रता और अमृत्व के मांगलिक प्रतीक के रूप में अंकन किया गया है। इसे लक्ष्मी का प्रतीक माना जाता है। खजुराहो के मंदिरों से प्राप्त लक्ष्मी प्रतिमाओं में देवी को अमृतघट धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। वामन मंदिर के गर्भगृह द्वार पर वरदमुद्रा में लक्ष्मी की मूर्ति का अंकन प्राप्त होता है जिसमें देवी लक्ष्मी को कमल और चक्र के साथ अमृतघट भी धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। खजुराहो की विश्वनाथ मंदिर के सामने बायीं ओर बने लघु मंदिर की आधार भित्ती पर अभय मुद्रा में ललितासन में विराजमान देवी लक्ष्मी के एक हाथ में अक्षमाला तथा चौथे हाथ में अमृतघट है शेष ऊपरी दोनों हाथों में कमल है। [18]

भारतीय संस्कृति एवं कला में वीणा को पवित्र और दिव्य माना गया है । खजुराहो के मंदिरों में वीणा बजाती हुई प्रतिमाएं जो ज्ञान और विद्या की देवी सरस्वती का प्रतीक माना जाता है। खजुराहो में ज्ञान की देवी सरस्वती की एक उत्कृष्ट प्रतिमा मुख्य रूप से वीजा मंडल मंदिर की खुदाई से प्राप्त हुई है, जिसमें सरस्वती को वीणा धारी प्रदर्शित किया गया है यह एक अत्यंत अलंकृत और सुंदर प्रतिमा है। [19] सरस्वती की एक अन्य प्रतिमा कंदरिया महादेव मंदिर की आधार भित्ती पर अंकित की गई है जिसमें देवी की प्रथम और चतुर्थ भुजा में वीणा धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। पार्श्वनाथ मंदिर की दायीं और बायीं बहिर्भित्ती पर अंकित सरस्वती की प्रथम भुजा में

वीणा का अंकन प्राप्त होता है। विश्वनाथ मंदिर के गर्भगृह द्वार पर और चतुर्भुज मंदिर के गर्भगृह द्वार के उच्च स्तंभ पर अंकित प्रतिमाओं में सरस्वती को वीणा धारी प्रदर्शित किया गया है। वामन मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर तथा जगदम्बा मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर अंकित सरस्वती की वरद प्रतिमा में वीणा का प्रदर्शन किया गया है। [20] इसके अतिरिक्त खजुराहो के अन्य मंदिरों के शिल्पांकन में भी वीणा धारी देवी सरस्वती की प्रतिमाओं को स्थान दिया गया है। सरस्वती के अतिरिक्त दिक्पाल ईशान को भी वीणा धारी अंकित किया गया है। लक्ष्मण मंदिर के पृष्ठ भाग में दायीं ओर बने लघु मंदिर तथा सामने बायीं ओर बने लघु मंदिर में चतुर्भुजी ईशान के नीचे की दो भुजाओं में वीणा प्रदर्शित किया गया है। [21]

मांगलिक प्रतीक डमरू खजुराहो के मंदिरों में, विशेष रूप से शिव केंद्रित मंदिरों जैसे कंदरिया महादेव मंदिर, दुलादेव मंदिर, विश्वनाथ मंदिर के साथ लक्ष्मण मंदिर में भगवान शिव के साथ मांगलिक प्रतीक के रूप में डमरू को प्रमुखता से प्रदर्शित किया गया है, जो न केवल संगीत वाद्ययंत्र बल्कि आध्यात्मिक और ब्रह्मांडीय रहस्य को दर्शाने वाला एक महत्वपूर्ण पवित्र मांगलिक प्रतीक है, यह ब्रह्मांडीय ऊर्जा, सृजन, ध्वनि और समय के अनंत प्रवाह का प्रतीक माना जाता है। खजुराहो की दूलादेव मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर नटराज शिव (नृत्यरत) की डमरू धारी द्वादशभुजी प्रतिमा है। लक्ष्मण मंदिर के पृष्ठ भाग पर दायीं बहिर्भित्ति पर तथा खजुराहो संग्रहालय में संग्रहित नटराज शिव की मूर्ति में डमरू का अंकन प्राप्त होता है। [22]

खजुराहो के मंदिरों की प्रतिमाओं और भित्ति चित्रों में ध्वज का अंकन एक प्रमुख धार्मिक और मांगलिक प्रतीक के रूप में किया गया है। ध्वज धर्म के साथ ही विजय, दैवीय उपस्थित और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक माना जाता है। मंदिर के शीर्ष पर या मूर्तियों के साथ इसका अंकन यह सुनिश्चित करता है कि मंदिर की पवित्रता बनी रहे और उपासक मंदिर के गर्भगृह में विराजमान दिव्य शक्ति को पहचान सके। खजुराहो से प्राप्त लक्ष्मण मंदिर के सामने बायीं ओर बने लघु मंदिर की दीवार पर गणेश की स्थानक (खड़ी मुद्रा में) प्रतिमा के साथ ही वायु देव की प्रतिमा के हाथ में ध्वज अंकित है। मंदिर के पृष्ठ भाग पर दायीं ओर बने लघु मंदिर में अष्टभुजी गणेश की ध्वजाधारी स्वरूप का अंकन प्राप्त होता है। पार्श्वनाथ मंदिर की पृष्ठभित्ती तथा कंदरिया मंदिर की आंतरिक प्रदक्षिणा पर वायु देव की ध्वजाधारी प्रतिमा का अंकन है। इसी प्रकार जगदम्बा मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर ध्वजाधारी वायु की प्रतिमा प्रदर्शित की गई है। [23]

खजुराहो की मूर्ति कला में कुण्डिका (एक विशेष प्रकार का कमंडल या जलपात्र) ब्रह्मा का प्रतीक माना गया है। खजुराहो के मंदिरों की बहिर्भित्ती पर उकेरी गई प्रतिमाओं में कई बार इसे प्रदर्शित किया गया है, जो सांसारिक जीवन (काम/भोग) के बीच में आध्यात्मिक पवित्रता का संतुलन दर्शाते हैं। कुण्डिका का अंकन ब्रह्मा के अतिरिक्त शिव, विष्णु तथा माता पार्वती के विभिन्न स्वरूपों के साथ प्रदर्शित किया जाता है, जो इनकी तपस्वी या ज्ञान स्वरूप भूमिका को रेखांकित करता है। खजुराहो की भरत चित्रगुप्त मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर, लक्ष्मण मंदिर के सामने दायीं और बने लघु मंदिर तथा कंदरिया महादेव मंदिर की आंतरिक प्रदक्षिणा में नीलकंठ का कुण्डिकाधारी रूप प्रदर्शित है। अघोर शिव स्वरूप की प्रतिमा खजुराहो की पार्श्वनाथ मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती पर कुण्डिकाधारी प्रदर्शित है। कंदरिया महादेव मंदिर और वामन मंदिर की दायीं बहिर्भित्ती तथा चतुर्भुज मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर भैरव प्रतिमा के हाथ में कुण्डिका का अंकन है। इसी प्रकार प्रतापेश्वर मंदिर की आधार भित्ती पर कुण्डिकाधारी काली की अष्टभुजी प्रतिमा है। [24]

खजुराहो से प्राप्त मांगलिक प्रतिकों में लड्डुक का भी चित्रांकन प्राप्त होता है। खजुराहो की मंदिर वास्तुकला में विशेष रूप से गणेश और कुछ अन्य देवताओं की मूर्तियों के हाथों में लड्डुक (मोदक) का अंकन समृद्धि, ज्ञान, पूर्णता और आध्यात्मिक मिठास के मंगल प्रतीक के रूप में किया गया है। लड्डुक मांगलिक प्रतीक युक्त प्रतिमाएं न केवल धार्मिक आस्था बल्कि सांसारिक सुख समृद्धि का भी बोध कराती हैं। खजुराहो की भरत चित्रगुप्त मंदिर की बायीं बहिर्भित्ती पर बने लघु फलक और जवारी मंदिर के अर्धमंडप पर बने लघु फलक तथा जगदम्बा मंदिर के आधार भित्ती पर गणेश प्रतिमा में लड्डुक पात्र का अंकन है। विश्वनाथ मंदिर के पृष्ठ भाग पर दायीं ओर बने लघु मंदिर तथा लक्ष्मण मंदिर के अग्रभाग पर बायीं ओर बने लघु मंदिर में चतुर्भुजी गणेश को लड्डुक सहित प्रदर्शित किया गया है। [25]

उपरोक्त मांगलिक प्रतीक के अतिरिक्त खजुराहो से प्राप्त देव प्रतिमाओं में अंकित कुछ आयुध प्रतिकों की गणना मांगलिक प्रतीक के रूप में की जाती है जिसमें चक्र, गदा, त्रिशूल व धनुष आदि का खजुराहो की देव प्रतिमाओं में मांगलिक प्रतीक के रूप में अंकन प्राप्त होता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में विष्णु को शंख, चक्र व गदा धारण किए बताया गया है। रूपमंडन में नृसिंह को पद्म, गदा, शंख और चक्र धारण किए उल्लेख किया गया है। अग्नि पुराण में परशुराम को धनुष, बाण, परशु और खड्गधारी बताया गया है। [26] लक्ष्मण एवं चतुर्भुज मंदिर से प्राप्त केशव की प्रतिमा के हाथों में शंख, पद्म के साथ गदा और चक्र को भी प्रदर्शित किया गया है। पार्श्वनाथ मंदिर में माधव को शंख के साथ गदा और चक्र से युक्त दिखाया गया है। इसी प्रकार लक्ष्मण मंदिर में विष्णु प्रतिमा में भी शंख, पद्म के साथ गदा और चक्र का अंकन किया गया है। खजुराहो के विभिन्न मंदिरों से शिव के अनेक रूपों की प्रतिमाएं प्राप्त हुई है जिनमें मांगलिक प्रतीक के रूप में त्रिशूल का अंकन किया गया है। कंदरिया मंदिर एवं चित्रगुप्त मंदिर में शिव के नीलकंठ रूप की प्रतिमा की भुजाओं में पद्म और विष पात्र के साथ ही त्रिशूल का भी अंकन किया गया है। वामन मंदिर तथा भरत चित्रगुप्त मंदिर में स्थित कल्याण सुंदर शिव, दूलादेव मंदिर में चतुर्भुजी एवं अष्टभुजी नटराज शिव प्रतिमा के एक भुजा में मांगलिक प्रतीक के रूप में त्रिशूल का अंकन किया गया है। कंदरिया महादेव मंदिर, दूलादेव मंदिर और विश्वनाथ मंदिर में अघोर शिव की अष्टभुजी प्रतिमा की एक भुजा में त्रिशूल प्रदर्शित है। खजुराहो से प्राप्त शिव की त्रिपुरान्तक प्रतिमा में उन्हें घट, धनुष, बाण तथा नरमुंड धारण किए हुए प्रदर्शित किया गया है। लक्ष्मण मंदिर में दुर्गा का सिंहवाहिनी रूप है जिसमें 6 भुजाएं हैं। यह भग्न प्रतिमा है किंतु इसके एक हाथ में त्रिशूल दृष्टिगत है। विश्वनाथ मंदिर में भी दुर्गा त्रिशूल धारिणी है। दुर्गा का योगेश्वरी रूप खजुराहो की दूलादेव मंदिर और लक्ष्मण मंदिर में त्रिशूल धारिणी हैं। सप्तमातृकाओं में महेश्वरी और चामुंडा की भुजाओं में त्रिशूल का अंकन मिलता है। लक्ष्मण मंदिर में त्रिशूल धारी ईशान की प्रतिमा प्राप्त हुई है। वामन मंदिर के गर्भगृह द्वार पर वरद मुद्रा में अंकित चतुर्भुजी लक्ष्मी के हाथों में कमल, शंख, घट के साथ चक्र और गदा का भी अंकन प्राप्त होता है। [27] इस प्रकार खजुराहो की मूर्ति कला में मांगलिक प्रतीक तत्वों का महत्वपूर्ण स्थान है। इन प्रतीक तत्वों के अंकन से जहां देव लक्षण उद्घाटित हुए हैं वहीं मूर्ति शिल्प की सुंदरता में भी वृद्धि हुई है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, वासुदेवशरण – भारतीय कला, वाराणसी 1966, पृष्ठ सं 7
2. सिंह, शरद, खजुराहो की मूर्तिकला के सौन्दर्यात्मक तत्व, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी – 2006, पृष्ठ सं.- 96
3. साहू, सूरजपाल – मूर्तिकला का इतिहास, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2016, पृष्ठ सं. 33
4. सिंह, शरद- तत्रैव, पृष्ठ सं. 96- 97
5. वर्मा, डॉ. महेंद्र- बुंदेलखंड की वास्तुकला, भारतीय कला

प्रकाशन, 2003, पृष्ठ – 84
6. तत्रैव
7. सिंह, शरद- पू.नि. पृ. 98
8. वर्मा, डॉ. महेंद्र, बुंदेलखंड की वास्तुकला, भारतीय कला प्रकाशन, 2003, पृष्ठ, 84
9. पंडा, राजाराम, खजुराहो, मित्तल पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, 1991, पृष्ठ- 58
10. तिवारी, डॉ मारुतिनंदन, मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, 1991, पृष्ठ – 108
11. पंडा, राजाराम, पू. नि. पृष्ठ – 58
12. तिवारी, डॉ. मारुतिनंदन पू. नि. पृष्ठ - 108
13. सिंह, शरद, पू. नि. पृष्ठ – 99
14. तत्रैव – पृष्ठ- 100 – 101
15. अग्रवाल, कन्हैयालाल, खजुराहो दी मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड दिल्ली, 1980, पृष्ठ- 87
16. श्रीवास्तव, डॉ. ए. एल. भारतीय संस्कृति कला एवं इतिहास, हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली, 2018, पृष्ठ – 120
17. सिंह, शरद, पू. नि. पृष्ठ - 101
18. अग्रवाल, कन्हैयालाल – पू. नि. पृष्ठ – 87
19. आर्कियोलॉजिकल सर्वे आफ इंडिया – https ://asi.nic.in
20. वर्मा, डॉ. महेंद्र, पू. नि. पृष्ठ – 84
21. सिंह, शरद – पू.नि. – पृष्ठ – 101
22. तत्रैव
23. तत्रैव, पृष्ठ – 102
24. तत्रैव, पृष्ठ, 101 – 102
25. तत्रैव
26. तत्रैव, पृष्ठ- 84
27. वर्मा, डॉ. महेंद्र, खजुराहो में काम दर्शन, भारतीय कला प्रकाशन, दिल्ली, 2002, पृष्ठ - 50।